श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीमध्यद्वीप

यह द्वीप वर्तमान काल में 'माजिदा' के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्मरण - भक्ति का क्षेत्र है। इस स्थान पर एक समय मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, पुलस्तु, वशिष्ठ और क्रतु — इन सप्त - ऋषियों ने श्रीगौरहरि के गुणों से मुग्ध होकर, उनके दर्शनों की प्रार्थना की थी। सप्त- ऋषियों की साधना व उनके द्वारा लम्बे समय तक श्रीगौरहरि जी के श्रीपादपद्मों का चिन्तन करने पर भक्तवत्सल

श्रीगौरांग महाप्रभु जी ने एक दिन मध्याह के समय उन्हें दर्शन दिया था। चूंकि मध्याह्नकाल में यह घटना घटी थी; कहने का तात्पर्य मध्याह्न काल में अर्थात् दोपहर के समय श्रीगौरांग महाप्रभु जी ने सप्त ऋषियों को दर्शन दिया था, इसलिये इस स्थान का नाम 'मध्यद्वीप' हुआ।

'श्रीभक्तिरत्नाकर' नामक ग्रन्थ के बारहवें तरंग में वर्णन है: —

"श्रीनिवास-प्रति कहे ए माजिदा ग्राम।
कहये प्राचीन पूर्वे मध्यद्वीप नाम ॥

प्रभुर परमाद्भुत लीला मध्यद्वीपे।
मध्यद्वीपे नाम यैछे कहिये संक्षेपे।

एथा सप्तऋषि प्रभुगुणे मग्न हइया।
नानाकथा कहे नवद्वीप निरखिया॥

ऐछे महानन्दे कत कहि' परस्पर।
प्रभु - पादपद्म - चिन्ता करे निरन्तर॥

अति अनुरागे ऋषिगण आराधय।
भकतवत्सल प्रभु अधैर्याऽतिशय॥

मध्याहेर सूर्यसम मध्याह्न कालेते।
हइला साक्षात् शोभा के पारे वर्णिते॥

भुवनमोहन भंगि करिते दर्शन।
हैल अनिमिष ऋषिगणेर नयन॥

व्यापिल पुलक अंगे, नेत्रे अश्रुधार।
भूमि पड़ि' प्रभुरे प्रणमे बार बार॥

करिल अनेक स्तुति कहिले ना हय।
करि' प्रदक्षिण पुनः प्रभुरे कहय ॥

ओहे प्रभु, बहु अभिलाष मो सबार।
नेत्रे भरि' देखि एइ नदियाविहार ॥

नवद्वीप ध्यान येन करिये सदाइ।
निरन्तर तोमार भक्तेर गुण गाइ ॥

ऐछे कत प्रभु आगे कहि' ऋषिगण।
प्रभुके देखिते वान्छे सहस्रलोचन॥

ऋषिस्तुतिवशे प्रभु कहे ऋषिगणे।
हइवेक पूर्ण सबे ये करिला मने ॥

नवद्वीपलीला मोर अति गोप्य हय।
राखिबे गोपने इथे मोर सुखोदय ॥

शुनि' ऋषिगण कहेकि बलिब प्रभु।
करतले सूर्य कि आच्छन्न हय कभु॥"

ऐछे ऋषिगण कत कहये उल्लासे ।
शुनि' गौरचन्द्र प्रभु मने-मने हासे ॥

ऋषिगणे मनेर आनन्दे कृपा करि'।
हइलेन अन्तर्धान प्रभु गौरहरि ॥

प्रभु अदर्शनेते व्याकुल ऋषिगण ।
एथा हैते मध्याह्न करिला गमन ॥

गंगातीरे कुमारहट्टेर सन्निधाने ।
देखिया अपूर्व स्थान रहे सेइखाने ॥

यथास्थिति कैला ताहा प्रसिद्ध
आछय।
सप्तऋषिघाट अद्यापिह लोके कय ॥

ओहे श्रीनिवास मध्यद्वीपेर प्रसंग |
अल्पे जानाइनु' एथा हइल महारंग ॥

मध्याहेर सूर्य सम मध्याह - समय।
देखा दिला प्रभु, तेञि 'मध्यद्वीप'
कय॥"

श्रीईशान ने श्रीनिवास के प्रति कहा — यह 'माजिदा' ग्राम है। प्राचीन काल में पहले इसे 'मध्यद्वीप' नाम से कहते थे। श्रीमन्महाप्रभुजी की जैसी परमाद्भुत लीला मध्यद्वीप में हुई थी, उसे संक्षेप में कहता हूँ। यहाँ सप्तऋषिगण ने महाप्रभु जी के गुणों में मग्न होकर विभिन्न प्रकार से भगवान श्रीगौरहरि जी का गुणगान करते हुये, नवद्वीपधाम को देखा था।

इस प्रकार सप्तऋषि महानन्द में परस्पर भगवद् गुणगान वर्णन करते

हुए निरन्तर प्रभु - पादपद्मों की चिन्ता करते थे। अति अनुराग के साथ ऋषिगण द्वारा आराधना करने पर भक्त - वत्सल प्रभु अतिशय करुणा करके मध्याह्नकाल में सूर्य के समान तेजस्वी रूप में प्रकट हुए। श्रीगौरांग महाप्रभु जी के दिव्य तेजोमय रूप की उस शोभा का कौन वर्णन कर सकता है। महाप्रभु जी के भुवन मोहन हाव भाव - को दर्शन करके ऋषियों की आंखें खुली की खुली रह गयीं। उनके अंगों में पुलकावली व्यापने लगी, उनके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी, वे भूमि पर पड़कर महाप्रभु जी को बार - बार

प्रणाम करने लगे। उन्होंने कई तरह से उनकी स्तुति की व उनकी परिक्रमा करके कहने लगे हे प्रभो! हम सभी की अभिलाषा बहुत है कि हम नेत्र भरकर आपके श्रीनवद्वीप धाम का दर्शन करें, आपके नवद्वीप का सदा ध्यान करें एवं निरन्तर आपके भक्तों के गुण गाते रहें।

ऋषियों की स्तुति के वश में होकर महाप्रभुजी कहने लगे — ऋषियो! तुमने मन में जो सोचा है, वह सब पूर्ण होगा। मेरी नवद्वीप लीला अति गोपनीय है, मेरे सुख के लिये तुम सभी उसे गोपन रखना।

महाप्रभु जी की बात सुनकर ऋषियों ने कहा — क्या कहा प्रभो ! क्या भला हाथों के द्वारा भी सूर्य कभी आच्छादित हो सकता है।

इस प्रकार ऋषिगणों ने उल्लास के साथ महाप्रभु जी को बहुत कुछ कहा, जिसे सुनकर श्रीगौरचन्द्र प्रभु मन- मन में हँसे। दिल से ऋषियों को कृपा करके श्रीगौरहरि जी अन्तर्धान हो गये। महाप्रभु जी के अदर्शन से ऋषिगण व्याकुल हो गये एवं तभी वहाँ से चल पड़े तथा गंगा के किनारे कुमारहट्ट के निकट एक सुन्दर सा स्थान देखकर वहीं रहने लगे। जहाँ सप्तऋषि ठहरे थे, अब भी वह घाट

सप्तऋषिघाट के नाम से प्रसिद्ध है। हे श्रीनिवास! श्रीमध्यद्वीप का प्रसंग संक्षेप में मैंने आपको बताया है, जहाँ मध्याह के समय अर्थात् दोपहर के समय सप्तऋषियों को श्रीगौरहरि ने दर्शन दिया था, इसलिये इसे 'मध्यद्वीप' कहते हैं।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव